वैदिक-वर्ण व्यवस्था का वैज्ञानिक पक्ष

वैदिक साहित्य का उद्भव विश्व कल्याण के लिए हुआ है, फिर उसमें राग द्वेष और घृणा को ढूढ़ना क्षुद्र मानसिकता का परिचायक है। प्रत्येक वैदिक श्रृचा प्राणियों के मंगल से ओतप्रोत है। इस सम्बन्ध में अन्त:साक्ष्य से वैदिक प्रमाण उल्लेखनीय है :-

'' अन्ति सन्तं न जहा व्यन्ति सन्तं न पश्यति।
पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति ।। ''

अर्थात् हे मनुष्य। ईश्वरीय काव्य को देख, जो न कभी मिटता है और न कभी क्षीण होता है

'' यथेमां वाचं कल्याणी मावादानि जनेभ्य:।
ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय ।।''

(यजु. २६-२)

'' अर्थात् मेरी कल्याण करने वाली वाणी नर तथा नारी के लिए है जिनमें ब्राह्मण से लेकर शूद्र तथा अतिशूद्र तक के लिए यह वाणी आदेश है।ऐसी दिव्य वैदिक श्रृचायें भेदभाव एवं संकीर्णताओं से विहीन हैं वैदिक प्रेरणाओं कों न समझ कर, भ्रमित लोग वेदोक्तियों का अनर्थ कर बैठते हैं, जिससे वे लाभान्वित नही हो सकते।

वैदिक-वर्ण व्यवस्था को न समझ कर उसे भ्रमितों ने जाति-पांति से जोड़ दिया तथा समाज और राष्ट्र, मानव और मानव को बाटने का दुस्साहस किया जब कि वैदिक वर्णव्यवस्था कर्माश्रित है। वह जातिवाचक नही अपितु कर्म वाचक है। कहा गया है -
'' जन्मना जायते शूद्र: संस्कारात् द्विज उच्यते ''
अर्थात् जन्म से सभी शूद्र हैं, कर्म से ही ब्राह्मण द्विज बनते हैं। इन नीति वचनों में जातिवाद का विष कही नही मिलता। मानव की कलुषित प्रवृत्तियों ने ही भेदभाव, घ्रणा, एवं राग द्वेष को जन्म देकर समाज के वातावरण को जहरीला बनाया है।

वैदिक साहित्य के अनुसार वर्णव्यवस्था का विधान वैज्ञानिक और न्याय संगत है। देश का संचालन अनेक प्रकार के व्यक्तियों से होता है जिनमें विद्वान, क्षत्रिय,वैश्य एवं समाज सेवी व्यक्ति होते हैं, जो अपने-अपने क्षेत्रों में रह कर राष्ट्र रक्षा के व्रत का निर्वाह करते हैं।

वर्णव्यवस्था का वैदिक स्वरुप समझने हेतु ऋग्वेदीय पुरुष-सूक्त उल्लेखनीय है जहाँ इसकी वैज्ञानिक व्याख्या मिलती है। स्वयं सृष्टि निर्माण एक यज्ञ है जिसमें पुरुष की बलि दी जाती है। इस सूक्त में ब्रह्मणादि चार वर्णों का वर्णन मिंलता है। पुरुषों के कर्मानुसार चार भेद हैं जिन्हें शरीर के अवयवों द्वारा वर्णित किया गया है :-

'' ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्
बाहू राजन्य: कृत:।
ऊरु तदस्य यद्वैश्य :
पद्भ्यां शूद्रो अजायत ।। '' (ऋ १०/१२)

अर्थात् इस प्रजापति का ब्राह्मणत्व मुख है, क्षत्रिय भुजाओं के समान, वैश्य प्रजापति के ऊरु (जंधा) से, तथा शूद्र पैरों से उत्पन्न हुआ है। ब्राह्मण ज्ञान का, क्षत्रिय शक्ति का, वैश्य अर्थव्यवस्था का तथा शूद्र सेवा का प्रतीक है।

चाहे शरीर की व्यवस्था हो, या समाज और देश की, इनका संचालन विविध अंगों एवं व्यवस्थाओं से होता है। वर्णव्यवस्था का जीता जागता उदाहरण मानव शरीर है जिसमें मस्तिष्क ब्राह्मण का, भुजायें क्षत्रिय का, पेट संचय का, तथा पैर सेवा का प्रतीक हैं। हर अंग का अपना अलग महत्व है। सिर का काम भुजायें नही कर सकतीं, ना ही भुजाओं का कार्य हाथ कर सकते। पैर का

कार्य उदर नही कर सकता, ना ही उदर का कार्य पैर कर सकते। हर अंग का अपना अलग-अलग कार्य व्यापार है। किसी अंग का किसी अंग से विरोध नही क्योंकि सभी परस्पर आश्रित हैं, उनमें ऊँच नीच का भाव नही है।

यही व्यवस्था देश के संचालन के लिए है। कर्म और योग्यता से ही कोई ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य और क्षूद्र बनता है। हर व्यक्ति बुद्धि-वैभव और योग्यता में समान नही है। कोई शासक है तो कोई शासित है। किन्तु इस वर्णाव्यवस्था को न समझ कर समाज का वातावरण प्रदूषित है।

वैदिक-वर्णव्यवस्था की वैदिक सोच को भूल कर अवैज्ञानिक जातिवाद का जन्म हुआ। तभी से ऊँच-नीच की दुर्भावनाओं ने जन्म लेकर समाज के वातावरण को प्रदूषित किया। न्याय और अन्याय के बीच तभी से संघर्ष छिड़ा जिसका जीता जागता रुप सामाजिक विसंगतियों एवं भेदभाव के रुप में दिखाई पड़ रहा है। दलितों की बातों में दलित भावनायें पनपने लगीं और विखण्डन का वातावरण उत्पन्न हुआ जिसमें राष्ट्रीय जीवन में विखराव आया है।

राष्ट्रीय एकता या विश्वप्रेम की बात वैदिक अवाहन के अनुकरण के बिना अधूरी है। आज अपेक्षा मानवता के संरक्षक की है ना कि जातिगत संकीर्णताओं के आरक्षण की, जो हीनभावनाओं के विकास का ही पर्याय है। हमें वेद वाणी पर गंम्भीरता से विचार कर, कलुषित भावनाओं को समाप्त करना है जिससे आत्मा का विकास हो सके। वेद वाणी आपसी सद्भावों के विकास की पुनीत प्रेरणायें संजोये हैं :

'' मा भ्राता भ्रातरं द्विषत् - मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यंचः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया।। ''

(अथर्व.३/३०/३)

अर्थात् भाई-भाई से विरोध न करे, बहन के साथ भी अनुकूल हो। मानव- मानव, मन वचन और कर्म से एक होकर कल्याणमयी वाणी बोलें। वैदिक ऋचाओं पर मनन की आवश्यकता है, तभी उनका प्रतीकार्त समझ में आ सकेगा, वैदिक वर्णाव्यवस्था की वैज्ञानिक व्याख्या विश्वमंगल की भावना से गर्भित है जिसमें पारस्परिक भेदभाव की कोई दुर्भावना नही। अतः जातिवाद के विषैले वातावरण को समाप्त करने के लिए कर्मव्यवस्था को महत्व देना है। विवेक और वैदिक सोच जातिगत संकीर्णाताओं को समाप्त करने का उत्तम उपाय है।

- डॉ. महाश्वेता चतुर्वेदी
प्रोफेसर्स कालोनी
(बरेली कालेज परिसर)
श्यामगंज, बरेली - २४३००५